किताब व सुन्नत की रौशनी में

तालीफ़
अबू ज़ैद ज़मीर

तरजमा व कम्पोजिंग
मज़हर उमरी व तस्लीम उमरी

1. नमाज़ की निय्यत

1. बग़ैर निय्यत की नमाज़ नहीं होती

अल्लाह के रसूलﷺ फ़रमाते हैं:

आमाल का दारोमदार निय्यतों पर है और हर शख़्स को वही मिलेगा जिस की उस ने निय्यत की | (बुख़ारी बदउल वह्य 1, मुस्लिम: किताबुल इमारा: 155 (1907)) रावी: उमर	إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى [خ: بدء الوحي ١ – م: الإمارة ١٥٥ – (١٩٠٧)] عن عمر

नोट: निय्यत दिल के इरादे का नाम है| ज़बान से नमाज़ की निय्यत करना किताब व सुन्नत से साबित नहीं|

2. क़िबला रुख़ हो कर नमाज़ अदा करना

2. मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ रुख़ करना

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

ऐ नबी आप के चेहरा का बार बार आस्मान की त़रफ़ उठना हम देख रहे हैं, लीजिए हम आप को उसी क़िबले की त़रफ़ फेर देते हैं जिसे आप पसंद करते हैं, पस आप अपना रुख़ मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ फेर लीजिए और (ऐ मुसल्मानो!) तुम जहां कही भी रहो नमाज़ में अपना रुख़ मस्जिदे ह़राम ही की त़रफ़ करना। (सूरह अल बक़रा 144)	قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاء فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّواْ وُجُوِهَكُمْ شَطْرَهُ [البقرة ١٤٤]

3. काअ़बा की त़रफ़ रुख़ करना

बरा बिन आ़ज़िबﷺ फ़रमाते हैं:

हम ने अल्लाह के रसूलﷺ के साथ बैतुल मक़्दिस की जानिब रुख़ कर के तक़रीबन 16 (सोलह) या 17 (सत्रह) महीने नमाज़ पढ़ी फिर हमें कअ़बा की त़रफ़ फेर दिया गया। (बुख़ारी: तफ़्सीरूल क़ुरआन 4492, मुस्लिम: अल मसाजिद व मवाजिइस्सलाह: 819) अल्फ़ाज़ मुस्लिम के हैं।	صَلَّيْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ نَحْوَ بَيْتِ الْمَقْدِسِ سِتَّةَ عَشَرَ شَهْرًا أَوْ سَبْعَةَ عَشَرَ شَهْرًا ثُمَّ صُرِفْنَا نَحْوَ الْكَعْبَةِ [خ: تَفْسِيرِ الْقُرْآنِ ٤٤٩٢ – م: الْمَسَاجِدِ وَمَوَاضِعِ الصَّلَاةِ ٨١٩] واللفظ لمسلم

3. नमाज़ में क़ियाम करना

4. क़ियाम कुदरत रखने वाले पर फ़र्ज़ है और माअ़ज़ूर के लिए रुख़्सत है

इमरान बिन हुसैनؓ फ़रमाते हैं:

मुझे बवासीर की शिकायत थी। मैं ने नबीﷺ से नमाज़ के बारे में पूछा। आप ने फ़रमाया: खड़े हो कर नमाज़ पढ़ो, अगर इस की कुदरत ना होतो बैठ कर पढ़ो, और अगर इस की भी कुदरत ना हो तो करवट पर नमाज़ पढ़ लो। (बुख़ारी: अल जुमाअ़ 1117)	قَالَ كَانَتْ بِي بَوَاسِيرُ فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ الصَّلَاةِ فَقَالَ صَلِّ قَائِمًا فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَقَاعِدًا فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَعَلَى جَنْبٍ [خ: الجمعة ١١١٧]

5. नमाज़ में निगाह को सज्दे की जगह रखना

आ़इशा रज़िअल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं:

अल्लाह के रसूलﷺ काअ़बतुल्लाह में दाख़िल हुऐ। आप की नज़रें (नमाज़ में) सज्दे की जगह से ना हटीं यहां तक की आप बाहर आ गए। (इब्ने खुज़ैमा, अल बैहक़ी फिल कुबरा, अल हाकिम) (अल इरवा जि.2 स़.73) (स़हीह)	دَخَلَ رسولُ الله ﷺ الكَعْبَةَ ما خَلَفَ بَصَرُهُ مَوْضِعَ سُجُوْدِهِ حتَّى خَرَجَ مِنْهَا. (خز هق ك) [الإرواء ج٢ص٧٣] (صحيح)

4. नमाज़ की तक्बीरात

6. क़िबला रुख़ खड़े होने के बाद तकबीर कहना

अबू हुमैद अस् साअ़िदीﷺ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूलﷺ जब नामज़ के लिए खड़े होते तो क़िबला रुख़ हो जाते, दोनों हाथ उठाते और अल्लाहु अकबर कहते। (इब्ने माजा) (सहीह इब्ने माजा 654) (अस्लु सिफ़ति सलातिन्नबीﷺ जि.1 स.178) (सहीह)	كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَقَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ (هـ) [صحيح ابن ماجه ٦٥٤] [أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج١ ١٧٨] (صحيح)

7. इमाम के पीछे तकबीर कहना

अल्लाह के नबीﷺ फ़रमाते हैं:

जब इमाम अल्लाहु अक्बर कहे तो तुम भी अल्लाहु अक्बर कहो। फिर जब वो **سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ** समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदाह कहे तो तुम कहो: **رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ** रब्बना लकल ह़मद। (मुस्नद अह़मद, बैहक़ी, इब्ने खुज़ैमा, ह़ाकिम) अल्फ़ाज़ इब्ने खुज़ैमा के है। (स़हीह़ इब्ने खुज़ैमा 1577, अस्लु सिफ़ति सलातिन्नबी जि.3 स. 1050) (स़हीह़)	**فَإِذَا قَالَ الْإِمَامُ: اللَّهُ أَكْبَرُ** **فَقُولُوا: اللَّهُ أَكْبَرُ** **فَإِذَا قَالَ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ،** **فَقُولُوا: رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ** (حم هق خز ك) واللفظ لابن خزيمة [صحيح ابن خزيمة ١٥٧٧، أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج٣ ص١٠٥٠] (صحيح)

8. तक्बीर के मक़ामात और अल्फ़ाज़

अल्लाह के रसूलﷺ फ़रमाते हैं:

किसी भी शख़्स की नमाज़ नहीं होती यहां तक कि वो ठिक तरह़ वुज़ू कर ले कि पानी वुज़ू के आ़ज़ा तक पहुंच जाए| फिर اللَّهُ أَكْبَرُ (अल्लाहु अक्बर) कहे और अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की ह़मद व सना बयान करे| फिर उसे क़ुरआन से जो मुयस्सर हो वो पढ़ ले| फिर اللَّهُ أَكْبَرُ (अल्लाहु अक्बर) कहे और इत्मिनान से रुकूअ़ करे यहां तक कि उस के जोड़ क़रार पा लें| फिर कहे سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ (समिअल्लाहु लिमन ह़मिदाह) और ठीक तरह़ खड़ा हो जाए| फिर कहे اللَّهُ أَكْبَرُ (अल्लाहु अक्बर) और इत्मिनान के साथ सज्दा करे यहां तक कि उस के जोड़ क़रार पा जाएं| फिर اللَّهُ أَكْبَرُ (अल्लाहु अक्बर) कहे और सज्दे से सर उठा ले और ठीक तरह़ से बैठ जाए| फिर اللَّهُ أَكْبَرُ (अल्लाहु अक्बर) कहे और इत्मिनान के साथ दूसरा सज्दा करे यहां तक कि उस के जोड़ क़रार पा जाएं| फिर सर उठा ले और اللَّهُ أَكْبَرُ (अल्लाहु अक्बर) कहे| अगर वो (पूरी नमाज़ में) इसी तरह़ करे तो उस की नमाज़ मुकम्मल हो गई | (अबू दावूद, नसाई, इब्ने माजा, ह़ाकिम) रावी: रिफ़ाआ़ह बिन राफ़ेअ़ (स़ह़ीह़ अल जामे 2420) (स़ह़ीह़) (अस़्लु सिफ़ति स़लातिन्नबीﷺ जि.1 स़.181)	إِنَّهُ لَا تَتِمُّ صَلَاةٌ لِأَحَدٍ مِنْ النَّاسِ حَتَّى يَتَوَضَّأَ فَيَضَعَ الْوُضُوءَ – يَعْنِي – مَوَاضِعَهُ ثُمَّ يُكَبِّرُ وَيَحْمَدُ اللَّهَ جَلَّ وَعَزَّ وَيُثْنِي عَلَيْهِ وَيَقْرَأُ بِمَا تَيَسَّرَ مِنْ الْقُرْآنِ ثُمَّ يَقُولُ اللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ يَرْكَعُ حَتَّى تَطْمَئِنَّ مَفَاصِلُهُ ثُمَّ يَقُولُ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَائِمًا ثُمَّ يَقُولُ اللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ يَسْجُدُ حَتَّى تَطْمَئِنَّ مَفَاصِلُهُ ثُمَّ يَقُولُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَيَرْفَعُ رَأْسَهُ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا ثُمَّ يَقُولُ اللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ يَسْجُدُ حَتَّى تَطْمَئِنَّ مَفَاصِلُهُ ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَيُكَبِّرُ فَإِذَا فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ تَمَّتْ صَلَاتُهُ (د ن هـ ك) عن رفاعة بن رافع [صحيح الجامع ٢٤٢٠] (صحيح) [أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج١ ص١٨١]

5. रफ़उल यदैन

9. रफ़उ़ल यदैन कितने मक़ामात पर है?

नाफ़ेअ़ फ़रमाते हैं:

इब्ने उमर जब नामाज़ में दाख़िल होते तो अल्लाहु अक्बर कहते और रफ़उल यदैन करते| जब रुकूअ़ करते तो रफ़उल यदैन करते| जब **سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ** (समिअल्लाहु लिमन ह़मिदाह) कहते तो रफ़उल यदैन करते| जब दो रकअ़त मुकम्मल कर के (तशह्हुद के बाद तीसरी रकअ़त के लिए) खड़े होते तो रफ़उल यदैन करते| और अ़ब्दुल्लाह बिन उमरﷺ ने इस अ़मल को नबीﷺ की जानिब मन्सूब किया| (बुख़ारी: अल आज़ान 739)	**أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَامَ مِنْ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَرَفَعَ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللَّهِ ﷺ** [خ: الآذان ٧٣٩]

नोट: यानी अ़ब्दुल्लाह बिन उमरﷺ खूद भी रफ़उल यदैन करते और उसे अल्लाह के नबीﷺ का अ़मल क़रार देते|

10. रफ़उल में कंधों तक दोनों हाथ उठाना[١]

अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﵄ फ़रमाते हैं:

मैं ने नबी ﷺ को देखा कि आप नमाज़ का आग़ाज़ तक्बीर से करते थे| आप जब **اللَّهُ أَكْبَرُ** (अल्लाहु अक्बर) कहते तो दोनों हाथ कंधों तक उठाते| जब रुकूअ़ के लिए तक्बीर कहते तो फिर उसी त़रह़ करते और जब **سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ** (समिअल्लाहु लिमन ह़मिदाह) कहते तब भी उसी त़रह़ करते और **رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ** (रब्बना व लकल ह़मद) कहते लेकिन ये अ़मल (यानी रफ़उल यदैन) सजदा करते वक़्त और सज्दे से सर उठाते वक़्त नहीं करते थे|

(बुख़ारी: अल आज़ान 735, मुस्लिम: अस्सलाह 586)

رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ
افْتَتَحَ التَّكْبِيرَ فِي الصَّلاَةِ
فَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ
حَتَّى يَجْعَلَهُمَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ
وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَهُ
وَإِذَا قَالَ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ
فَعَلَ مِثْلَهُ
وَقَالَ: رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ
وَلاَ يَفْعَلُ ذَلِكَ حِينَ يَسْجُدُ
وَلاَ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ

[خ:الآذان ٧٣٥ – م: الصلاة ٥٨٦]

---

[1] عن عبد الله بن عمر

أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا وَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ [خ:الآذان ٧٣٥ ونحوه – م: الصلاة ٥٨٦]

11. रफ़उल यदैन में दोनों हाथ कानों तक उठाना

मालिक बिन हुवैरिस رضي الله عنه फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूल ﷺ जब तक्बीर कहते तो अपने दोनों हाथ उठाते (यानी रफ़उल यदैन करते) यहां तक कि उन्हें कानों तक ले जाते, फिर जब रुकूअ़ करते तो दोबारा दोनों हाथ उठा कर कानों तक ले जाते| फिर जब रुकूअ़ से सर उठाते तो **سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ** (समिअल्लाहु लिमन ह़मिदाह) कहते और उसी त़रह़ (रफ़उल यदैन) करते| (मुस्लिम: अस्स़ल्लाह 589)	**أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَقَالَ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ** [م: الصلاة ٥٨٩]

6. हालते क़ियाम में हाथों का मक़ाम

12. नमाज़ में क़ियाम में दाएं हाथ से बाएं हाथ को पकड़ना

वाइल बिन हुज्र फ़रमाते हैं:

मैं ने अल्लाह के रसूलﷺ को देखा कि आप जब नमाज़ में क़ियाम की हालत में होते तो अपने दाएं हाथ से बायां हाथ थाम लेते| (मुसनद अहमद, अबू दावूद, नसाई) अल्फ़ाज़ नसाई की रिवायत के है| (नसाई बितहक़ीक़िल अलबानी 887) (सहीहुल इसनाद)	رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ إِذَا كَانَ قَائِمًا فِي الصَّلَاةِ قَبَضَ بِيَمِينِهِ عَلَى شِمَالِهِ (حم د ن) واللفظ للنسائي [ن بتحقيق الألباني ٨٨٧] (صحيح الإسناد)

13. ज़िराअ़ पर हाथ रखना

सहल बिन सअ़दरضي الله عنه फ़रमाते हैं:

लोगों को ये हुक्म दिया जाता था कि आदमी नमाज़ में अपने दाएं हाथ को बाएं हाथ पर ज़िराअ़ (यानी बाज़ू) पर रखे| (बुख़ारी: अल आज़ान 740)	كَانَ النَّاسُ يُؤْمَرُونَ أَنْ يَضَعَ الرَّجُلُ الْيَدَ الْيُمْنَى عَلَى ذِرَاعِهِ الْيُسْرَى فِي الصَّلَاةِ [خ: الآذان ٧٤٠]

14. बाईं हथेली की पुश्त, कलाई और बाज़ू पर दायां हाथ रखना

वाइल बिन हुज्रرضي الله عنه फ़रमाते हैं:

मैं ने (अपने आप से) कहा: मैं ज़रूर अल्लाह के रसूलﷺ को देखूंगा कि आप कैसे नमाज़ पढ़ते हैं। लिहाज़ा मैं ने आप को बग़ौर देखा। आप खड़े हुए और तक्बीर कही और रफ़उल यदैन किया यहां तक कि दोनों हाथ कानों तक उठा लिए फिर अपने दाएं हाथ को बाएं हाथ की पुश्त कलाई और बाज़ू पर रखा। (मुस्नद अहमद, अबू दावूद) अल्फ़ाज़ अबू दावूद के हैं। (अबू दावूद बितहक़ीकिल अल बानी 727) (सहीह)	قُلْتُ: لَأَنْظُرَنَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ كَيْفَ يُصَلِّي قَالَ: فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ قَامَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى وَالرُّسْغَ وَالسَّاعِدَ (حم د) واللفظ لأبي داود [د بتحقيق الألباني ٧٢٧] (صحيح)

15. रुकूअ़ से पहले के क़ियाम में हाथ बांधना

वाइल बिन हुज्रﷺ फ़रमाते हैं:

उन्होंने नबीﷺ को देखा कि जब आप नमाज़ में दाख़िल हुए तो तक्बीर कही। ह़दीस़ के रावी हम्माम ने दोनों कानों तक इशारा किया। फिर आप ﷺ ने अपने ऊपर चादर लपेट ली। फिर अपने दाएं हाथ को बाएं हाथ पर रखा। फिर जब रुकूअ़ का इरादा किया तो अपनी चादर से हाथ बाहर निकाले, रफ़उल यदैन किया, फिर तक्बीर कही, फिर रुकूअ़ किया। फिर जब समिअ़ल्लाहु लिमन ह़मिदाह कहा तो रफ़उल यदैन किया। फिर जब सज्दा किया तो दोनों हथेलियों के दरमियान सज्दा किया। (मुस्लिम: अस्सलाह 54-(401))	أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ – وَصَفَ هَمَّامٌ حِيَالَ أُذُنَيْهِ – ثُمَّ الْتَحَفَ بِثَوْبِهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى (١) فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ أَخْرَجَ يَدَيْهِ مِنَ الثَّوْبِ ثُمَّ رَفَعَهُمَا ثُمَّ كَبَّرَ فَرَكَعَ، فَلَمَّا قَالَ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا سَجَدَ سَجَدَ بَيْنَ كَفَّيْهِ [م: الصلاة ٥٤ - (٤٠١)]

16. ज़िराअ़ के वस्त़ पर हाथ रखना

अ़लीﷺ से रिवायत है:

{فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ} (की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि इस से मुराद) दाएं हाथ को बाईं बाज़ू के दरमियानी हिस्से पर सीने पर रखा जाए। (अत्तारीख़ुल कबीर लिल बुख़ारी (6/437) रक़म 2911)	{فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ} وَضْعُ يَدِهِ الْيُمْنَى عَلَى وَسَطِ سَاعِدِهِ عَلَى صَدْرِهِ [التاريخ الكبير للبخاري (٦/ ٤٣٧) رقم ٢٩١١]

[1] عَنْ وَائِلٍ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَاضِعًا يَمِينَهُ عَلَى شِمَالِهِ فِي الصَّلَاةِ

17. फ़र्ज़ नमाज़ में भी हाथ बांधना

हुल्बؓ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूलﷺ हमें नमाज़ पढ़ाते तो बाएं हाथ को दाएं हाथ से पकड़ते| (मुस्नद अह़मद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा) अल्फ़ाज़ तिर्मिज़ी के है| (तिर्मिज़ी बितह़क़ीक़िल अलबानी 252) (ह़सन स़ह़ीह़)	**كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَؤُمُّنَا فَيَأْخُذُ شِمَالَهُ بِيَمِينِهِ** (١) (حم ت هـ) واللفظ للترمذي [ت بتحقيق الألباني ٢٥٢] (حسن صحيح)

18. सीने पर हाथ बांधना

वाईल बिन हुज्रؓ फ़रमाते हैं:

मैं ने अल्लाह के रसूलﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी| आप ने अपना दाया हाथ बाएं हाथ पर सीने पर रखा| (स़ह़ीह़ इब्ने खुज़ैमा 479)(स़ह़ीह़) (अस़्लु सि़फ़ति स़लातिन्नबीﷺ जि.1 स़.215)	**صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى يَدِهِ الْيُسْرَى عَلَى صَدْرِهِ** [صحيح ابن خزيمة ٤٧٩] (صحيح) [أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج١ ص٢١٥]

त़ावूस (ताबेई) फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूलﷺ नमाज़ में दाएं हाथ को बाएं हाथ पर रखते फिर दोनों हाथ सीने पर बांध लेते| (अबू दावूद) (अबू दावूद बितह़क़ीक़िल अल बानी 759) (अस़्लु सि़फ़ति स़लातिन्नबीﷺ जि.1 स़.217) (स़ह़ीह़)	**كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَضَعُ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى يَدِهِ الْيُسْرَى ثُمَّ يَشُدُّ بَيْنَهُمَا عَلَى صَدْرِهِ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ** (د) [سنن أبي داود بتحقيق الألباني ٧٥٩] [أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج١ ص٢١٧] (صحيح)

---

[1] قال ﷺ: إِنَّا مَعْشَرَ الْأَنْبِيَاءِ أُمِرْنَا أَنْ نُؤَخِّرَ سُحُورَنَا وَنُعَجِّلَ فِطْرَنَا وَأَنْ نُمْسِكَ بِأَيْمَانِنَا عَلَى شَمَائِلِنَا فِي صَلَاتِنَا (حب) [التعليقات الحسان ١٧٦٧] (صحيح)

हुल्ब अत्ताई رضي الله عنه फ़रमाते हैं:

मैं ने नबीﷺ को देखा आप नमाज़ ख़त्म कर के कभी दाईं जानिब से पलटते कभी बाईं जानिब से पलटते| (और मुक़्तदियों की तरफ़ रुख़ कर के बैठते) और मैं ने देखा कि आप इस को अपने सीने पर रखते| यह्या (बिन सईद) ने (इस की सिफ़त बयान की तो) अपने दाएं हाथ को बाएं हाथ के जोड़ पर रखा| (मुस्नद अह़मद) (स़ह़ीह़ अबी दावूद अल उम्म 737) (अस़्लु सिफ़ति स़लातिन्नबीﷺ जि.1 स़.217) (इस की इस्नाद को ह़सन कहा जा सकता है)	**رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَنْصَرِفُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ يَسَارِهِ وَرَأَيْتُهُ قَالَ يَضَعُ هَذِهِ عَلَى صَدْرِهِ** [1] **وَصَفَّ يَحْيَى الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فَوْقَ الْمِفْصَلِ** (حم) [صحيح أبي داود الأم تحت ٧٣٧] [أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج١ ص٢١٦] (إسناده محتمل للتحسين)

---

[1] قال ابن الجوزي:

أَخْبَرَنَا ابْنُ الْحُصَيْنِ قَالَ أَنْبَأَنَا ابْنُ الْمُذْهِبِ قَالَ أَنْبَأَنَا أَحْمَدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَحْمَدَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِي سِمَاكٌ عَنْ قَبِيصَةَ بْنِ هُلْبٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ **رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَضَعُ هَذِهِ عَلَى هَذِهِ على صَدره وَوصف يَحْيَى الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فَوْقَ الْمِفْصَل** [التحقيق في مسائل الخلاف (١/ ٣٣٨) رقم ٤٣٤]

(सनद) हुल्ब अत्ताई رضي الله عنه फ़रमाते हैं: मैं ने रसूल ﷺ को देखा आप कि आप इस (हाथ) को इस (हाथ) पर अपने सीने पर रखते| यह्या (बिन सईद) ने (इस की सिफ़त बयान की तो) अपने दाएं हाथ को बाएं हाथ के जोड़ पर रखा| [अत्तह्क़ीक़ फ़ी मसाइलिल ख़िलाफ़ जि 1 स 338 नम्बर 434]

7. दुआए इसतिफ़ताह़ और तअ़व्वुज़

19. क़िराअत से पहले तअ़व्वुज़

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैं:

फिर जब आप कुरआन पढ़ने लगें तो शैत़ान मर्दूद से अल्लाह की पनाह त़लब कर लिया किजिए। (सूरह अन्नह़ल 98)	فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ [النحل ٩٨]

20. दुआए इसतिफ़ताह़ और तअ़व्वुज़

अबू सईद ﷛ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूल ﷺ जब रात में (तहज्जुद की नामज़) के लिए ख़ड़े होते तो तक्बीर कहते और ये दुआ़ करते: **سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ. أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْثِهِ وَنَفْخِهِ** [١] फिर आप नमाज़ (यानी क़िराअत) शुरू करते| (अबू दावूद, तिर्मिज़ी, मुसनद अह़मद, दारिमी) अल्फ़ाज़ दारिमी के हैं| (इर्वाउल ग़लील जि.2 स़. 51) (ह़सन)	**كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ فَكَبَّرَ قَالَ: سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْثِهِ وَنَفْخِهِ ثُمَّ يَسْتَفْتِحُ صَلَاتَهُ** (د[٢] ت حم مي) واللفظ للدارمي [إرواء الغليل ج٢ ص٥١] (حسن)

[१] ऐ अल्लाह! मैं तेरी पाकी बयान करता हूं तेरी तारीफ़ के साथ, तेरा नाम बर्कत वाला है और तेरी बुजुर्गी सब से उंची है| तेरे सिवा कोई माबूदे बरह़क़ नहीं| मैं सब कुछ सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले अल्लाह की पनाह लेता हूं शैत़ान मर्दूद से, उस के वस्वसों से, उस के थुथ्कारने से और फूंकने से|

[2] عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا قَامَ مِنْ اللَّيْلِ كَبَّرَ ثُمَّ يَقُولُ: سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرَكَ ثُمَّ يَقُولُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ثَلَاثًا ثُمَّ يَقُولُ اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا ثَلَاثًا أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنْ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ ثُمَّ يَقْرَأُ
(د ت حم) [سنن أبي داود بتحقيق الألباني ٧٧٥] (صحيح)

21. दुआए इसतिफ़्ताह सिर्रन पढ़ना

अबू हुरैराहﷺ फ़रमाते हैं:

<table>
<tr>
<td>अल्लाह के रसूलﷺ तक्बीर और किराअत के दरमियान कुछ देर सुकूत इख़्तियार करते| रावी कहते हैं मैं समझता हूं उन्होंने "هُنَيَّةً" (कुछ देर) कहा| मैं ने अ़र्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूलﷺ, मेरे मां बाप आप पर फ़िदा हों आप तक्बीर व किराअत के दरमियान सुकूत करते हैं, इस में आप क्या पढ़ते हैं? आप ने फ़रमाया: मैं यूं कहता हूं:
اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ
كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ الْخَطَايَا
كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنْ الدَّنَسِ
اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ
بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ [1]
(बुख़ारी: अल आज़ान 744, मुस्लिम: अल मसाजिद व मवाज़िउस्सलाह 940)</td>
<td>كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ
يَسْكُتُ بَيْنَ التَّكْبِيرِ
وَبَيْنَ الْقِرَاءَةِ إِسْكَاتَةً
–قَالَ أَحْسِبُهُ قَالَ هُنَيَّةً –
فَقُلْتُ بِأَبِي وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ
إِسْكَاتُكَ بَيْنَ التَّكْبِيرِ وَالْقِرَاءَةِ مَا تَقُولُ
قَالَ : أَقُولُ اللَّهُمَّ
بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ
كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ الْخَطَايَا
كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنْ الدَّنَسِ
اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ
بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ
[خ: الآذان ٧٤٤ –
م: المساجد ومواضع الصلاة ٩٤٠ نحوه]</td>
</tr>
</table>

[1] ऐ अल्लाह मेरी और मेरी ख़ताओं के दरमियान ऐसे ही फ़ासला कर दे जैसे तू ने मश्रिक़ व मग़रिब के दरमियान दूरी कर दी है| ऐ अल्लाह, मुझे ख़ाताओं से वैसे ही पाक कर दे जैसे सफ़ेद कपडा गंदगी से साफ़ हो जाता है| ऐ अल्लाह मेरी ख़ताओं को पानी, बरफ़ और औलों से धो दे|

22. सुरतुल फ़ातिह़ा के क़बल और उस के बाद सूरह पढ़ने से पहले बिस्मिल्लाह सिर्रन पढ़े

अनस बिन मालिकؓ फ़रमाते हैं:

मैं ने अल्लाह के रसूलﷺ, अबू बकर, उमर और उस्मान रज़िअल्लाहु अन्हुम के साथ नमाज़ पढ़ी। वो सब अपनी नमाज़ की शुरूआत **{الْحَمْد لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ}** से करते थे। वो क़िराअत की इब्तिदा में या अख़ीर में **{بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ}** नहीं पढ़ते थे। (मुस्लिम: अस्सलाह 605, बुख़ारी: अल आज़ान: 743) अल्फ़ाज़ मुस्लिम के हैं।	**صَلَّيْتُ خَلْفَ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ فَكَانُوا يَسْتَفْتِحُونَ بِ {الْحَمْد لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ} لَا يَذْكُرُونَ [1] {بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ} فِي أَوَّلِ قِرَاءَةٍ وَلَا فِي آخِرِهَا [2]** [م: الصلاة ٦٠٦ - خ: الآذان ٧٤٣ نحوه] واللفظ لمسلم

एक रिवायत में है:

वो सब **{بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ}** को बलंद आवाज़ से नहीं पढ़ते थे। (मुस्नद अह़मद) (अस़्लु सिफ़ति स़लातिन्नबीﷺ जि.1 स़.278) (स़ह़ीह़)	**وَكَانُوا لَا يَجْهَرُونَ [3] بْ {بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ}** (حم) [أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج١ ص٢٧٨] (صحيح)

---

[1] عَنْ أَنَسٍ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ لَا يَقْرَءُونَ - يَعْنِي لَا يَجْهَرُونَ -
(حم) [مسند أحمد ط الرسالة (٢٠/ ٤٥٩) رقم ١٣٢٥٩] قال الأرنؤوط : حديث صحيح وهذا إسناد قوي

[2] زِيَادَةٌ فِي الْمُبَالَغَةِ، فِي النَّفْيِ، وَإِلَّا فَإِنَّهُ لَيْسَ فِي آخِرِهَا بَسْمَلَةٌ، وَيَحْتَمِلُ أَنْ يُرِيدَ بِآخِرِهَا السُّورَةَ الثَّانِيَةَ الَّتِي تُقْرَأُ بَعْدَ الْفَاتِحَةِ. [سبل السلام (١/ ٢٥٦)]

[3] عَنْ أَنَسٍ قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ ؓ
فَلَمْ أَسْمَعْ أَحَدًا مِنْهُمْ يَجْهَرُ بِـ{بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ} [ن: الإفتتاح : تَرْكُ الْجَهْرِ بِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ] (صحيح)

8. सूरतुल फ़ातिह़ा की क़िराअत और आमीन

23. हर नमाज़ में सूरतुल फ़ातिह़ा की क़िराअत ज़रूरी है

अल्लाह के रसूलﷺ फ़रमाते हैं:

जिस ने फ़ातिह़तुल किताब (सूरह फ़ातिह़ा) नहीं पढ़ी उस की नमाज़ नहीं| (बुख़ारी: अल आज़ान : 756, मुस्लिम: अस्सलाह 34 - (394) रावी: उबदा बिन सामित	لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ [خ: الآذان ٧٥٦ – م: الصلاة ٣٤ – (٣٩٤)] عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ

24. जहरी नमाज़ में इमाम के पीछे सिर्फ़ सूरतुल फ़ातिह़ा पढ़ना

उबदा बिन सामितؓ फ़रमाते हैं:

हम ने फज्र की नमाज़ अल्लाह के रसूलﷺ के पीछे अदा की| आप ने क़िराअत की तो क़िराअत आप पर भारी हो गई| जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया: शायद तुम इमाम के पीछे पढ़ते हो| हम ने कहा: हां, ऐ अल्लाह के रसूलﷺ! हम जल्दी जल्दी ऐसा करते हैं| आप ने फ़रमाया: ऐसा ना किया करो (यानी मत पढ़ा करो) सिवाए सूरह फ़ातिह़ा के, इस लिए कि उस के बग़ैर नमाज़ नहीं होती| (अबू दावूद) (अबू दावूद बि तहक़ीक़िल अलबानी 823) (इस की इस्नाद जय्यद है इस में कोई तअ़्न नहीं है जैसा कि इमाम अल ख़त्ताबी ने मआ़लिमुस्सुनन में फ़रमाया है|) (अस़्लु सिफ़ति स़लातिन्नबीﷺ जि.1 स़.327)	كُنَّا خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي صَلَاةِ الْفَجْرِ فَقَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَثَقُلَتْ عَلَيْهِ الْقِرَاءَةُ فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ لَعَلَّكُمْ تَقْرَءُونَ خَلْفَ إِمَامِكُمْ قُلْنَا نَعَمْ هَذًّا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ لَا تَفْعَلُوا إِلَّا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ فَإِنَّهُ لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِهَا (د) [ابوداؤد بتحقيق الالباني ٨٢٣] (وهذا إسناد جيد لا مطعن فيه - كما قال الخطابي في المعالم) [أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج١ ص٣٢٧] [1]

[1] عَنْ مَنْ شَهِدَ ذَاكَ قَالَ: ﷺ فَلَمَّا قَضَى صَلَاتَهُ قَالَ: «أَتَقْرَؤُونَ وَالْإِمَامُ يَقْرَأُ؟» قَالُوا: إِنَّا لَنَفْعَلُ قَالَ: «فَلَا تَفْعَلُوا إِلَّا أَنْ يَقْرَأَ أَحَدُكُمْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ فِي نَفْسِهِ [جزء القراءة للبخاري ٣٧] (حسن) [أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج١ ص٣٢٩]

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

जिस ने नमाज़ पढ़ी और उस में सूरह फ़ातिहा ना पढ़ी तो वो नमाज़ ख़िदाज है| आप ने ये बात तीन मर्त बा कही[1]| (यानी)मुकम्मल नहीं है| अबू हुरैराह ﷺ से पूछा गया: हम इमाम के पीछे होते हैं, (क्या तब भी सूरह फ़ातिहा पढ़ें)? फ़रमाया: अपने जी में पढ़ लिया करो| (मुस्लिम: अस्सलाह: 598) रावी: अबू हुरैराह	مَنْ صَلَّى صَلَاةً لَمْ يَقْرَأْ فِيهَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ فَهِيَ خِدَاجٌ – ثَلَاثًا – غَيْرُ تَمَامٍ فَقِيلَ لِأَبِي هُرَيْرَةَ : إِنَّا نَكُونُ وَرَاءَ الْإِمَامِ فَقَالَ: اقْرَأْ بِهَا فِي نَفْسِكَ ... [م: الصلاة : ٥٩٨] عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

यज़ीद बिन शरीक से रिवायत है:

मैं ने उमरﷺ से इमाम के पीछे क़िराअत के मुताल्लिक़ पूछा| आप ने फ़रमाया: सूरह फ़ातिहा पढ़ लिया करो| मैं ने कहा: आप(इमाम) हों तब भी? आप ने फ़रमाया: मैं(इमाम) रहूं तब भी| मैं ने कहा: अगरचे आप जहरी क़िराअत करें? आप ने फ़रमाया: अगरचे मैं जहरी क़िराअत करूं| (अद्दाराक़ुत्नी, अल बहक़ी फ़िल क़ुबरा) (अज़्ज़ईफ़ा जि.2 स़.419 रक़म 991)(स़ह़ीह़)	أَنَّهُ سَأَلَ عُمَرَ عَنِ الْقِرَاءَةِ خَلْفَ الْإِمَامِ فَقَالَ: اقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ قُلْتُ: وَإِنْ كُنْتَ أَنْتَ؟ قَالَ: وَإِنْ كُنْتُ أَنَا قُلْتُ: وَإِنْ جَهَرْتَ؟ قَالَ: وَإِنْ جَهَرْتُ. (قط هق) [الضعيفة ج٢ ص٤١٩ تحت رقم ٩٩١] (صحيح)

[1] قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى صَلَاةً لَمْ يَقْرَأْ فِيهَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ فَهِيَ خِدَاجٌ فَهِيَ خِدَاجٌ فَهِيَ خِدَاجٌ غَيْرُ تَمَامٍ (د) [د بتحقيق الألباني ٨٢١] (صحيح)

9. सूरतुल फ़ातिह़ा के ख़त्म पर आमीन कहना?

25. सुरतुल फ़ातिह़ा के ख़त्म पर उंची आवाज़ से आमीन कहना

वाईल बिन हुज्रﷺ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूल ﷺ जब وَلَا الضَّالِّينَ तिलावत फ़रमाते तो बलंद आवाज़ से आमीन कहते| (अबू दावूद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा) अल्फ़ाज़ अबू दावूद के हैं| (सुनन अबी दावूद बितह़क़ीक़िल अलबानी 932) (स़ह़ीह़)	كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا قَرَأَ ((وَلَا الضَّالِّينَ)) قَالَ آمِينَ وَرَفَعَ بِهَا صَوْتَهُ (د ت ن هـ) واللفظ لأبي داود [سنن أبي داود بتحقيق الألباني ٩٣٢] (صحيح)

26. इमाम ऊंची आवाज़ से आमीन कहे

वाईल बिन हुज्रﷺ से रिवायत है:

उन्होंने अल्लाह के रसूलﷺ की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी तो आपﷺ ने बलंद आवाज़ से आमीन कही| (अबू दावूद) (सुनन अबी दावूद बितह़क़ीक़िल अलबानी 933) (ह़सन स़ह़ीह़)	أَنَّهُ صَلَّى خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَجَهَرَ بِآمِينَ (د) [سنن أبي داود بتحقيق الألباني ٩٣٣] (حسن صحيح)

27. मुक़्तदी भी इमाम के ताबेअ् हो कर जहर से आमीन कहे

अल्लाह के रसूलﷺ फ़रमाते हैं:

जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो क्यूंकि जिस की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के मुवाफ़िक़ हो जाए तो उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं। (बुख़ारी: अल आज़ान 780, मुस्लिम: अस्सलाह: 618) रावी: अबू हुरैराह	إِذَا أَمَّنَ الْإِمَامُ فَأَمِّنُوا فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ [خ: الآذان ٧٨٠ – م: الصلاة ٦١٨] عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

इब्ने जुरैज फ़रमाते हैं मैं ने अ़ता रहिमहुल्लाह से पूछा:

क्या अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैरؓ सूरह फ़ातिह़ा के ख़ात्मे पर आमीन कहा करते थे? आप ने फ़रमाया: हां, और आप के पीछे तमाम (नमाज़ी) भी आमीन कहते ह़त्ता कि मस्जिद गूंज उठती। (मुस़न्नफ़ अ़ब्दिर् रज़्ज़ाक़: 2640 जि.2 स़.96) (स़ह़ीह़) (रवाहुल बुख़ारी तालिक़न: अल आज़ान: बाबु जहरिल इमाम बित्तमीन, तमामिल मिन्ना 178, अज़्ज़ईफ़ा जि.2 स़.368, 369)	قُلْتُ لَهُ أَكَانَ بْنُ الزُّبَيْرِ يُؤَمِّنُ عَلَى إِثْرِ أُمِّ الْقُرْآنِ؟ قَالَ نَعَمْ، وَيُؤَمِّنُ مِنْ وَرَاءِهِ حَتىَّ أَنَّ لِلْمَسْجِدِ لَلَجَّةً [مصنف عبدالرزاق: ٢٦٤٠ ج٢ ص٩٦] (صحيح) [رواه البخاري تعليقا : الآذان : باب جهر الإمام بالتأمين، تمام المنة ص١٧٨، الضعيفة ج٢ص٣٦٨-٣٦٩]

10. सूरतुल फ़ातिह़ा के बाद क़िराअत

28. सूरतुल फ़ातिह़ा के बाद कुरआन में से जो चाहे पढ़े

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

जब तू (नमाज़ के लिए) खड़ा हो तो क़िब्ला रुख़ हो जा और तकबीर कह, फिर सूरह फ़ातिह़ा पढ़, फिर अल्लाह तआ़ला जितना मुक़द्दर करे इतना कुरआन पढ़ ले| (अबू दावूद, मुस्नद अह़मद, इब्ने ह़िब्बान) रावी: रिफ़ाआह बिन राफ़ेअ़ अज़्ज़ुरक़ी (सुनन अबी दावूद बतहकीकिल अलबानी 859) (ह़सन)	إِذَا قُمْتَ فَتَوَجَّهْتَ إِلَى الْقِبْلَةِ فَكَبِّرْ ثُمَّ اقْرَأْ بِأُمِّ الْقُرْآنِ وَبِمَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ تَقْرَأَ ... (د حم حب) عن رفاعة بن رافع الزُّرَقِيِّ. [سنن أبي داود بتحقق الألباني ٨٥٩] (حسن)

29. सिर्री नमाज़ में इमाम के पीछे सूरह अल फ़ातिह़ा के बाद मज़ीद क़िराअत करना

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाहؓ फ़रमाते हैं:

हम ज़ोहर व अ़स्र में इमाम के पीछे पहली दो रक्अ़तों में सूरह फ़ातिह़ा के साथ कोई सूरह पढ़ा करते थे और आख़िरी दो रक्अ़तों में सिर्फ़ सूरह फ़ातिह़ा पढ़ा करते थे| (इब्ने माजा) (सुनन अबी दावूद बितह़क़ीक़िल अलबानी 843) (स़ह़ीह़)	كُنَّا نَقْرَأُ فِي الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ خَلْفَ الْإِمَامِ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَسُورَةٍ وَفِي الْأُخْرَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ (هـ) [سنن أبي داود بتحقيق الألباني ٨٤٣] (صحيح)

30. सूरतुल फ़ातिहा के बाद क़िराअत लाज़िम नहीं है लेकिन बेहतर है

अबू हुरैराह﵁ फ़रमाते हैं:

हर नमाज़ में क़िराअत की जाती है। फिर अल्लाह के रसूलﷺ ने जो कुछ हमें बलंद आवाज़ से पढ़ कर सुनाया वो हम ने तुम लोगों को बलंद आवाज़ से पढ़ कर सुनाया। और जो कुछ आप ने सिर्री तौर पर पढ़ा, वो हम ने भी सिर्री तौर पर पढ़ा। अगर तुम सूरह फ़ातिहा से ज़ियादा ना पढ़ो तो तुम्हारे लिए काफ़ी है और अगर पढ़ लो तो बेहतर है। (बुख़ारी: अल आज़ान 772, मुस्लिम: अस्सलाह: 600)	فِي كُلِّ صَلَاةٍ يُقْرَأُ فَمَا أَسْمَعَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَسْمَعْنَاكُمْ وَمَا أَخْفَى عَنَّا أَخْفَيْنَا عَنْكُمْ وَإِنْ لَمْ تَزِدْ عَلَى أُمِّ الْقُرْآنِ أَجْزَأَتْ وَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ [خ: الآذان ٧٧٢ - م:الصلاة ٦٠٠]

जाबिर﵁ से रिवायत है:

उन्होंने मुआज़﵁ का क़िस्सा बयान किया और फ़रमाया: कि नबीﷺ ने उस नौजवान से फ़रमाया: ऐ मेरे भतीजे तुम जब नमाज़ पढ़ते हो तो कैसे करते हो? उस ने कहा: मैं सूरतुल फ़ातिहा पढ़ता हूं और अल्लाह तआला से जन्नत तलब करता हूं और जहन्नम से पनाह तलब करता हूं। और मैं नहीं जानता कि आप और मुआज़﵁ की गुनगुनाहट क्या होती है। आपﷺ ने फ़रमाया: मैं और मुआज़ इन्हीं दो चीज़ों के आस पास होते हैं। (अबू दावूद) (अबू दावूद बितहक़ीक़िल अलबानी 793) (सहीह)	- ذَكَرَ قِصَّةَ مُعَاذٍ - قَالَ: وَقَالَ يَعْنِي النَّبِيَّ ﷺ لِلْفَتَى: كَيْفَ تَصْنَعُ يَا ابْنَ أَخِي إِذَا صَلَّيْتَ؟ قَالَ: أَقْرَأُ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَأَسْأَلُ اللَّهَ الْجَنَّةَ وَأَعُوذُ بِهِ مِنَ النَّارِ وَإِنِّي لَا أَدْرِي مَا دَنْدَنَتُكَ وَلَا دَنْدَنَةُ مُعَاذٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: إِنِّي وَمُعَاذًا حَوْلَ هَاتَيْنِ أَوْ نَحْوَ هَذَا (د) [د بتحقيق الألباني ٧٩٣] (صحيح)

31. ज़ोहर व अ़स्र में सिर्फ़ पहली दो रकअ़तों में सूरह फ़ातिह़ा के बाद सूरत जोड़ना

अबू क़तादाﷺ फ़रमाते हैं:

नबीﷺ ज़ोहर और अ़स्र की पहली दो रकअ़त में सूरह फ़ातिह़ा के साथ कोई और सूरह पढ़ा करते थे और बसा औक़ात हमें कोई आयत सुना भी दिया करते| और आख़िरी दो रकआ़त में सिर्फ़ सूरह फ़ातिह़ा पढ़ा करते थे| (बुख़ारी: अल आज़ान: 762, मुस्लिम: अस्सलाह: 686) अल्फ़ाज़ मुस्लिम के हैं|	أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ مِنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَسُورَةٍ وَيُسْمِعُنَا الْآيَةَ أَحْيَانًا وَيَقْرَأُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُخْرَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ [خ: الآذان ٧٦٢ – م: الصلاة ٦٨٦] واللفظ لمسلم

32. सिर्री नमाज़ में इमाम का तीसरी चौथी रकअ़त में सूरह फ़ातिह़ा के बाद क़िराअत करना

अबू सईद ख़ुदरीﷺ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूलﷺ ज़ोहर की पहली दोनों रकअ़तों में तक़रीबन तीस (30) आयतें पढ़ते थे और बाक़ी दो रकअ़तों में तक़रीबन पंद्रा (15) आयतें या (पहली दो रकाअ़तों से) निस्फ़ क़िराअत करते थे| और अ़स्र की पहली दो रकअ़तों में तक़रीबन पंद्रा (15) आयतें पढ़ते और बाक़ी दो रकअ़तों में उस के निस्फ़ क़िराअत करते| (मुस्लिम: अस्सलाह 157 - (452))	أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي صَلَاةِ الظُّهْرِ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ قَدْرَ ثَلَاثِينَ آيَةً وَفِي الْأُخْرَيَيْنِ قَدْرَ خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً أَوْ قَالَ نِصْفَ ذَلِكَ – وَفِي الْعَصْرِ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ قَدْرَ قِرَاءَةِ خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً وَفِي الْأُخْرَيَيْنِ قَدْرَ نِصْفِ ذَلِكَ [م: الصلاة ١٥٧ – (٤٥٢)]

33. जहरी नमाज़ में इमाम का तीस्री चौथी रक्अ़त में सूरह फ़ातिह़ा के बाद क़िराअत करना

अबू अ़ब्दिल्लाह सुनाबिही﷠ फ़रमाते हैं:

मैं अबू बकर सि़द्दीक़﷠ की ख़ि़लाफ़त के ज़माने में मदीना आया| मैं ने आप के पीछे मग़रिब की नमाज़ अदा की तो आप ने पहली दो रक्अ़तों में सूरतुल फ़ातिह़ा और क़िसा़रे मुफ़स्स़ल में से कोई सूरत पढ़ी| फिर जब वो तीस्री रक्अ़त के लिए खड़े हुए तो मैं उन के और क़रीब हो गया यहां तक कि क़रीब था कि मेरे कपड़े उन के कपड़ों से छू जाएं| फिर मैं ने उन्हें सूरतुल फ़ातिह़ा और ये आयत पढ़ते सुना| {رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ} [آل عمران: ٨] (मुवत्ता) (मुवत्ता बितह़क सलीम अल हिलाली 181) (सहीह मौक़ूफ)	قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ فِي خِلَافَةِ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ فَصَلَّيْتُ وَرَاءَهُ الْمَغْرِبَ فَقَرَأَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ بِأُمِّ الْقُرْآنِ وَسُورَةٍ، سُورَةٍ مِنْ قِصَارِ الْمُفَصَّلِ ثُمَّ قَامَ فِي الثَّالِثَةِ، فَدَنَوْتُ مِنْهُ حَتَّى إِنَّ ثِيَابِي لَتَكَادُ أَنْ تَمَسَّ ثِيَابَهُ. فَسَمِعْتُهُ قَرَأَ بِأُمِّ الْقُرْآنِ وَبِهَذِهِ الْآيَةِ {رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ} [آل عمران: ٨] (ط) [ط بتحقيق الأعظمي ٢٥٩]

34. तरतील से क़िराअत करना

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

और कु़रआन को ठहर ठहर कर पढ़िये। (सूरह अल मुज़्ज़म्मिल 4)	وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا [المزمل ٤]

35. अच्छी आवाज़ से क़िराअत करना

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

कु़रआन को अच्छी आवाज़ से ज़ीनत दो। इमाम बुख़ारी ने इसे तालीक़न रिवायत किया है। किताबुत्तौहीद, रावी: अल बरा बिन आ़ज़िब बाबु क़ौलिन्नबी ﷺ (अल माहिर बिल कु़रआन मअ़स्सफ़रतिल किरामिल बररा)	زَيِّنُوا الْقُرْآنَ بِأَصْوَاتِكُمْ رواه البخاري تعليقا : كتاب التوحيد: عَنْ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ باب قول النبيﷺ (الماهر بالقرآن مع السفرة الكرام البررة)

36. जो शख़्स कुरआन ना पढ़ सकता हो वो क्या करे?

अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رضي الله عنه फ़रमाते हैं:

एक आदमी अल्लाह के रसूल ﷺ के पास आया और कहा: मैं कुरआन से कुछ अख़ज़ (यानी हिफ़्ज़) नहीं कर सकता लिहाज़ा आप मुझे कुछ सिखा दीजिए जो मेरे लिए उस की बजाए काफ़ी हो जाए आप ने फ़रमाया: तुम यूं कहो: **سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ** उस शख़्स ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, ये तो अल्लाह के लिए है| मेरे लिए क्या है? आप ने फ़रमाया: यूं कह: **اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي وَارْزُقْنِي وَعَافِنِي وَاهْدِنِي** जब वो आदमी वापस जाने के लिए उठा तो अपने हाथ को यूं किया (यानी अपनी उंगलियों को बंद कर लिया जैसे कोई चीज़ महफ़ूज़ पकड़ ली जाती है) अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: इस ने अपने हाथ में ख़ैर समेट ली| (मुस्नद अह़मद, अबू दावूद, नसाई) अलफ़ाज़ अबू दावूद के है| (अबू दावूद बितह़क़ीक़िल अलबानी 832) (सह़ीह़)	**جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: إِنِّي لَا أَسْتَطِيعُ أَنْ آخُذَ مِنَ الْقُرْآنِ شَيْئًا فَعَلِّمْنِي مَا يُجْزِئُنِي مِنْهُ قَالَ: قُلْ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ فَمَا لِي قَالَ: قُلْ: اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي وَارْزُقْنِي وَعَافِنِي وَاهْدِنِي فَلَمَّا قَامَ قَالَ: هَكَذَا بِيَدِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: أَمَّا هَذَا فَقَدْ مَلَأَ يَدَهُ مِنَ الْخَيْرِ** (حم د ن) واللفظ لأبي داود [د بتحقيق الألباني ٨٣٢] (صحيح)

37. फ़ज्र की नमाज़ में जहरी क़िराअत करना

अ़म्र बिन हुरैसؓ फ़रमाते हैं:

उन्होंने अल्लाह के नबीﷺ को फज्र की नमाज़ में **{وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ}** (यानी सूरह अत्तक्वीर) पढ़ते सुना| (मुस्लिम: अस्सलाह 164 (456))	**أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْفَجْرِ {وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ}** [م: الصلاة ١٦٤ - (٤٥٦)]

38. ज़ोहर व अ़स्र में सिर्री क़िराअत करना

अबू मअ़्मर रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

मैं ने ख़ब्बाब बिन अरत्त ؓ से पूछा: क्या नबीﷺ ज़ोहर और अ़स्र में क़िराअत करते थे? आप ने जवाब दिया: हां, मैं ने कहा: आप को इस क़िराअत का इल्म कैसे होता था? आप ने जवाब दिया: आपﷺ की दाढ़ी की ह़रकत से| (बुख़ारी: अल आज़ान 761)	**قُلْتُ لِخَبَّابِ بْنِ الأَرَتِّ: أَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الظُّهْرِ وَالعَصْرِ؟ قَالَ: نَعَمْ قَالَ: قُلْتُ: بِأَيِّ شَيْءٍ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ قِرَاءَتَهُ؟ قَالَ: بِاضْطِرَابِ لِحْيَتِهِ** [خ: الآذان ٧٦١]

39. मग़रिब में जहर करना

जुबैर बिन मुत़इमؓ फ़रमाते हैं:

मैं ने अल्लाह के रसूलﷺ को नमाज़े मग़रिब में सूरह तूर की तिलावत करते सुना| (बुख़ारी: अल जिहाद वस्सियर 3050, मुस्लिम: अस्सलाह: 705)	**سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي المَغْرِبِ بِالطُّورِ** [خ: الجهاد والسير ٣٠٥٠ - م: الصلاة ٧٠٥]

40. इशा में जहर करना

अल बरा बिन आ़ज़िबﷺ फ़रमाते हैं :

मैं ने नबीﷺ को इशा की नमाज़ में {وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ} की तिलावत करते सुना। मैं ने आप से अच्छी आवाज़ या आप से अच्छी क़िराअत किसी और की नहीं सुनी। (बुख़ारी: अल आज़ान: 769, मुस्लिम: अस्सलाह: 708)	سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ فِي الْعِشَاءِ وَمَا سَمِعْتُ أَحَدًا أَحْسَنَ صَوْتًا مِنْهُ أَوْ قِرَاءَةً [خ: الآذان ٧٦٩ – م: الصلاة ٧٠٨]

11. रुकूअ़ और सुजूद की कैफ़िय्यत

अल्लाह तआ़ाला फ़रमाता है:

ऐ ईमान वालो! रुकूअ़ करो और सुजूद करो। (सूरह अल ह़ज 77)	يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا [الحج ٧٧]

41. रुकूअ़ में घुटनों को पकड़ना और कोहनियों को सीधा रखना

अ़ब्बास बिन सहल बिन सअ़्द फ़रमाते हैं:

अबू हुमैद, अबू सईद, सहल बिन सअ़्द और मुहम्मद बिन सलमाؓ जमा हुए और अल्लाह के रसूलﷺ की नमाज़ का तज़्किरा शुरू किया। अबू हुमैदؓ ने कहा: मैं अल्लाह के रसूलﷺ की नमाज़ को सब से ज़ियादा जानता हूं। अल्लाह के रसूलﷺ ने जब रुकूअ़ किया तो अपने दोनों हाथों से घुटनों को मज़्बूती से पकड़ लिया। दोनों हाथ सीधे तान कर रखे और कोहनियों को पहलू से दूर रखा। (अबू दावूद, तिर्मिज़ी) (सुनन तिर्मिज़ी बितह़क़ीक़िल अलबानी 260) (स़ह़ीह़)	**اجْتَمَعَ أَبُو حُمَيْدٍ وَأَبُو أُسَيْدٍ وَسَهْلُ بْنُ سَعْدٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ فَذَكَرُوا صَلَاةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَكَعَ فَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ كَأَنَّهُ قَابِضٌ عَلَيْهِمَا وَوَتَّرَ**[1] **يَدَيْهِ فَنَحَّاهُمَا عَنْ جَنْبَيْهِ** (د ت) [سنن للترمذي بتحقيق الألباني ٢٦٠] (صحيح)

बुख़ारी की रिवायत में है:

जब आप ने रुकूअ़ किया तो अपने हाथों से घुटनों को मज़्बूती से पकड़ लिया। (बुख़ारी: अल आज़ान: 828)	**وَإِذَا رَكَعَ أَمْكَنَ يَدَيْهِ مِنْ رُكْبَتَيْهِ** [خ: الآذان ٨٢٨]

[1] قَوْلُهُ (وَوَتَّرَ يَدَيْهِ) مِنَ التَّوْتِيرِ وَهُوَ جَعْلُ الْوَتَرِ عَلَى الْقَوْسِ. قَالَ فِي النِّهَايَةِ أَيْ جَعَلَهُمَا كَالْوِتْرِ مِنْ قَوْلِكَ وَتَّرْتَ الْقَوْسَ وَأَوْتَرْتَهُ شَبَّهَ يَدَ الرَّاكِعِ إِذَا مَدَّهَا قَابِضًا عَلَى رُكْبَتَيْهِ بِالْقَوْسِ إِذَا أُوتِرَتْ انْتَهَى [تحفة الأحوذي (٢/ ١٠٣)]

42. पीठ और सर का बराबर रखना

आ़इशा رضي الله عنها की ह़दीस़ में इस त़रह़ है:

अल्लाह के रसूलﷺ जब रुकूअ़ करते तो सर ना उपर उठाते ना नीचे छुकाते बल्कि दोनों के दर्मियान सीधा रखते| (मुस्लिम: अस्स़लाह: 768)	كَانَ إِذَا رَكَعَ لَمْ يُشْخِصْ رَأْسَهُ وَلَمْ يُصَوِّبْهُ وَلَكِنْ بَيْنَ ذَلِكَ [م: الصلاة ٧٦٨]

43. दोनों हाथों का घुटनों से पहले ज़मीन पर रखना

अल्लाह के रसूलﷺ फ़रमाते हैं:

जब तुम में से कोई सजदा करे तो अपने हाथ घुटनों से पहले ज़मीन पर रखे औरऊंट की त़रह़ ना बैठे| (अबू दावूद, नसाई) रावी: अबू हुरैराह (स़ह़ीह़ अल जामे 595, अल इर्वा जि 2 स़.79) (स़ह़ीह़)	إِذَا سَجَدَ أَحَدُكُمْ فَلْيَضَعْ يَدَيْهِ قَبْلَ رُكْبَتَيْهِ وَلَا يَبْرُكْ بُرُوكَ الْبَعِيرِ (د ن) عن أبي هريرة. [صحيح الجامع٥٩٥، الإرواء ج٢ص٧٩] (صحيح)

नाफ़ेअ़ रह़िमहुल्लाह इब्ने उमरؓ के मुताल्लिक़ नक़ल करते हैं:

(अ़ब्दुल्लाह बिन उमरؓ) घुट्नों से पहले हाथ ज़मीन पर रखा करते और फ़रमाते: अल्लाह के रसूलﷺ भी इसी त़रह़ किया करते थे| (स़ह़ीह़ इब्ने खुज़ैमा) (स़ह़ीह़ इब्ने खुज़ैमा 627) (इस्नादुहु स़ह़ीह़) इमाम बुख़ारी ने इस ह़दीस़ को अपनी स़ह़ीह़ में तालीक़न ज़िक्र किया है (किताबु सि़फ़तिस्स़लाह: बाबु यहवी बित्तक्बिरि ह़ीना यस्जुद)	أَنَّهُ كَانَ يَضَعُ يَدَيْهِ قَبْلَ رُكْبَتَيْهِ وَقَالَ : كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَفْعَلُ ذَلِكَ (ابن خزيمة) [صحيح ابن خزيمة ٦٢٧] (إسناده صحيح) وذكره البخاري أيضا في صحيحه معلقا [كتاب صفة الصلاة: باب يهوي بالتكبير حين يسجد]

44. सजदे के आअ्ज़ा

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

मुझे सात हड्डियों पर सजदा करने का हुक्म दिया गया है: पेशानी पर, आप ने नाक की तरफ़ इशारा किया। हाथों पर, घुट्नों पर, और पांव की उंगलियों पर। (बुख़ारी: अल आज़ान 812, मुस्लिम: 758) रावी: इब्ने अब्बास	أُمِرْتُ أَنْ أَسْجُدَ عَلَى سَبْعَةِ أَعْظُمٍ عَلَى الْجَبْهَةِ – وَأَشَارَ بِيَدِهِ عَلَى أَنْفِهِ – وَالْيَدَيْنِ وَالرُّكْبَتَيْنِ وَأَطْرَافِ الْقَدَمَيْنِ [خ: الآذان ٨١٢ م: الصلاة ٧٥٨] عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

उस शख़्स की नमाज़ नहीं जिस की नाक ज़मीन पर ना टिके जिस तरह उस की पेशानी टिकती है। (दार कुत्नी, बैहक़ी, हाकिम) (अस्लु सिफ़ति सलातिन्नबी ﷺ जि.2 स.733) (सहीह)	لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَا يُصِيبُ أَنْفُهُ مِنَ الْأَرْضِ مَا يُصِيبُ الْجَبِينُ (قط هق ك) [أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج٢ ص٧٣٣] (صحيح)

45. सजदों में हथेलियों को ज़मीन पर रखना और कोहनियों को उठाना

अल्लाह के रसूलﷺ फ़रमाते हैं:

जब तुम सजदा करो तो अपनी हथेलियों को ज़मीन पर रखो और कोहनियों को ज़मीन से ऊपर उठाओ। (मुस्लिम: अस्सलाह 763) रावी: अल बरा बिन आज़िब	إِذَا سَجَدْتَ فَضَعْ كَفَّيْكَ وَارْفَعْ مِرْفَقَيْكَ [م: الصلاة ٧٦٣] عَنْ الْبَرَاءِ

46. सज्दे में दोनों बाज़ू कुत्ते की त़रह़ ज़मीन पर ना बिछाए

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

सज्दे में एतेदाल से रहो और तुम में से कोई शख़्स़ अपने हाथ कुत्ते की त़रह़ ज़मीन पर ना बिछाए| (बुख़ारी: अल आज़ान 822, मुस्लिम: अस्स़लाह: 233 (493)) रावी: अनस बिन मालिक	اعْتَدِلُوا فِي السُّجُودِ وَلَا يَبْسُطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ انْبِسَاطَ الْكَلْبِ [خ: الآذان ٨٢٢ – م: الصلاة ٢٣٣ – (٤٩٣)] عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ

47. सज्दे में दोनों हाथों की उंग्लियों को ज़म करना और किब्ले की त़रफ़ रखना

वाईल बिन हुज्रؓ से रिवायत है:

नबीﷺ जब सज्दा करते तो अपनी उंग्लियों को आपस में मिला देते| (इब्ने खुज़ैमा, इब्ने ह़िब्बान, ह़ाकिम) (अस़्लु सिफ़ति स़लातिन्नबीﷺ जि.2 स़.726) (स़ह़ीह़ इब्ने खुज़ैमा 642) (स़ह़ीह़)	أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا سَجَدَ ضَمَّ أَصَابِعَهُ (خز حب ك) [أصل صفة صلاة النبيﷺ ج٢ ص٧٢٦] [صحيح ابن خزيمة ٦٤٢] (صحيح)

48. बाजुओं को पहलू से अलग रखना

अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुहै़ना ﷺ फ़रमाते हैं:

नबीﷺ जब सज्दा करते तो अपने बाजुओं को पहलू से इस क़द्र अलग रखते कि हमें आप की बग़लें दिखाई देतीं| (बुख़ारी: अस्स़लाह: 3564, मुस्लिम: अस्स़लाह: 2364 (495))	كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا سَجَدَ فَرَّجَ بَيْنَ يَدَيْهِ حَتَّى نَرَى إِبْطَيْهِ [خ: الصلاة ٣٥٦٤ - م: الصلاة ٢٣٦ - (٤٩٥)]

49. हथेलियों का कंधों के बराबर रखना

अबू हुमैद अस् साअि़दीﷺ फ़रमाते हैं:

नबीﷺ जब सज्दा करते तो नाक और पेशानी ज़मीन पर टिका देते| अपनी कोहनियों को पहलू से दूर रखते और हथेलियों को कंधों के बराबर रखते| (तिर्मिज़ी) (तिर्मिज़ी 270 बितह़क़ीक़िल अलबानी, अल इर्वा जि.2 स़. 16) (स़ह़ीह़)	أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا سَجَدَ أَمْكَنَ أَنْفَهُ وَجَبْهَتَهُ مِنْ الْأَرْضِ وَنَحَّى يَدَيْهِ عَنْ جَنْبَيْهِ وَوَضَعَ كَفَّيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ (ت) [ت ٢٧٠ بتحقيق الألباني، الإرواء ج٢ص١٦] (صحيح)

50. पेशानी का दोनों हथेलियों के दरमियान रखना

वाईल बिन हुज्र ﷺ की ह़दीस़ [1] में है:

जब (नबीﷺ ने) सजदा किया तो दोनों हथेलियों के दरमियान सजदा किया। (मुस्लिम: अस्स़लाह: 608)	فَلَمَّا سَجَدَ سَجَدَ بَيْنَ كَفَّيْهِ [م:الصلاة ٦٠٨]

51. पांव की उंग्लियों को क़िबले की त़रफ़ रखना

अबू हुमैद अस् साअ़िदीﷺ अल्लाह के नबीﷺ की नमाज़ के मुताल्लिक़ फ़रमाते हैं:

जब आपﷺ ने सजदा किया तो हाथों को ना बिछाया ना ही (पहलू से चिपका कर) समेटा और अपने दोनों पांव की उंग्लियों को क़िबला रुख़ किया। (बुख़ारी: अल आज़ान: 828)	فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَ يَدَيْهِ غَيْرَ مُفْتَرِشٍ وَلَا قَابِضِهِمَا (٢) وَاسْتَقْبَلَ بِأَطْرَافِ أَصَابِعِ رِجْلَيْهِ الْقِبْلَةَ [خ: الآذان ٨٢٨]

[1] وفي حديث وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ
أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ، وَصَفَ هَمَّامٌ حِيَالَ أُذُنَيْهِ – ثُمَّ الْتَحَفَ بِثَوْبِهِ
ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ أَخْرَجَ يَدَيْهِ مِنْ الثَّوْبِ
ثُمَّ رَفَعَهُمَا ثُمَّ كَبَّرَ فَرَكَعَ فَلَمَّا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا سَجَدَ سَجَدَ بَيْنَ كَفَّيْهِ [م:الصلاة ٦٠٨]

[2] قال الحافظ : (**وَلَا قَابِضِهِمَا**) : أَيْ بِأَنْ يَضُمّهُمَا. [فتح الباري]

52. ऐड़ियों को जोड़ना

अबू हुरैराहﷺ आइशा رضي الله عنها से रिवायत करते हैं: फ़रमाती हैं:

एक रात मैं ने अल्लाह के रसूलﷺ को बिस्तर पर नहीं पाया। मैं ने आप को तलाश किया तो मेरा हाथ आप के तल्वों पर जा गिरा। आप सज्दे में थे और आप ने अपनी एड़ियां खड़ी रखी थीं। (मुस्लिम: अस्सलाह: 751)	فَقَدْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَيْلَةً مِنْ الْفِرَاشِ فَالْتَمَسْتُهُ فَوَقَعَتْ يَدِي عَلَى بَطْنِ قَدَمَيْهِ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ وَهُمَا مَنْصُوبَتَانِ [م: الصلاة ٧٥١]

इब्ने खुज़ैमा की रिवायत में है:

मैं ने आपﷺ को सजदा में पाया। आप की एड़ियां एक दूस्रे से मिली हुइ थीं। पैरों की उंग्लियां क़िबला रुख़ थीं। (इब्ने खुज़ैमा, इब्ने हि़ब्बान, ह़ाकिम, बैहक़ी फ़िल कुबरा) (स़ह़ीह़ इब्ने खुज़ैमा 654) (स़ह़ीह़)	فَوَجَدْتُهُ سَاجِدًا رَاصًّا عَقِبَيْهِ مُسْتَقْبِلا بِأَطْرَافِ أَصَابِعِهِ الْقِبْلَةَ (خزحب ك هق) [صحيح ابن خزيمة ٦٥٤](صحيح)

53. सज्दों के दरमियान बैठने की कैफ़िय्यत

अबू हुमैद अस् साअ़िदी ﷺ फ़रमाते हैं:

नबी ﷺ जब सज्दा करते तो अपने पांव की उंगलियां खोल देते। फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुए सज्दे से सर उठाते और अपना बायां पांव बिछा कर उस पर बैठ जाते फिर दूस्रे सज्दे में भी इसी तरह करते। (अबू दावूद) (अबू दावूद बितहक़ीक़िल अलबानी 963) (सहीह)	وَيَفْتَحُ أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ إِذَا سَجَدَ ثُمَّ يَقُولُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَيَرْفَعُ وَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا ثُمَّ يَصْنَعُ فِي الْأُخْرَى مِثْلَ ذَلِكَ ... (د) [د بتحقيق الألباني ٩٦٣] (صحيح)

ताऊस रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

हम ने इब्ने अ़ब्बास ﷺ से दोनों क़दमों पर इक़आ[1] करने के बारे में पूछा: (अबू दावूद की रिवायत में है कि सज्दों में इक़आ के मुताल्लिक़ पूछा) तो इब्ने अ़ब्बास ने कहा ये सुन्नत है। हम ने उन से कहा: हम उस को आदमी की ग़लती शुमार करते हैं। इब्ने अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया: ये तुम्हारे नबी की सुन्नत है। (मुस्लिम, अबू दावूद) (मुस्लिम: अल मसाजिद व मवाज़िउस्सलाह 32 - (536), अबू दावूद बितहक़ीक़िल अलबानी 845) (सहीह)	قُلْنَا لِابْنِ عَبَّاسٍ فِي الْإِقْعَاءِ عَلَى الْقَدَمَيْنِ [زاد أبو داود: فِي السُّجُودِ] فَقَالَ: هِيَ السُّنَّةُ، فَقُلْنَا لَهُ: إِنَّا لَنَرَاهُ جَفَاءً بِالرَّجُلِ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: بَلْ هِيَ سُنَّةُ نَبِيِّكَ ﷺ (م د) [م: المساجد ومواضع الصلاة ٣٢ - (٥٣٦)، د بتحقيق الألباني ٨٤٥] (صحيح)

[1] दोनों सज्दों के दरमियान दोनों ऐड़ियों को खड़ा कर के उन पर बैठने को इक़आ कहते हैं। ये भी नबी ﷺ से साबित सुन्नत है।

12. रुकुअ़ व सुजूद के मुताल्लिक़ अज़्कार

54. रुकूअ़ में और रुकूअ़ से उठ कर और सजदों में क्या कहे

हुज़ैफ़ाﷺ नबीﷺ की नमाज़ के मुताल्लिक़ फ़रमाते हैं:

फिर आपﷺ ने रुकूअ़ किया और आप (سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ) कहते रहे| आप का रुकूअ़ आप के क़ियाम जितना ही था| फिर आप ने कहा سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ [1] [رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ] फिर इतना लम्बा क़ियाम किया जितना आप का रुकूअ़ था, फिर आप ने सज्दा किया और सज्दा में (سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى) कहते रहे| आप के सज्दे क़ियाम जितने ही लम्बे थे| (मुस्लिम: सलातुल मसाफ़िरीन व क़स्रिहा 1291)	ثُمَّ رَكَعَ فَجَعَلَ يَقُولُ سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ فَكَانَ رُكُوعُهُ نَحْوًا مِنْ قِيَامِهِ ثُمَّ قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ [رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ] ثُمَّ قَامَ طَوِيلًا قَرِيبًا مِمَّا رَكَعَ ثُمَّ سَجَدَ فَقَالَ سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى فَكَانَ سُجُودُهُ قَرِيبًا مِنْ قِيَامِهِ [2] [م: صَلَاةِ الْمُسَافِرِينَ وَقَصْرِهَا ١٢٩١]

[1] मुस्लिम ही के एक तरीक़ में समिअ़ल्लाहु लिमन ह़मिदाह के बाद रब्बना लकल ह़मद भी है| (मुस्लिम: स़लातुल मुसाफ़िरीन व क़स्रिहा 1291)

[2] وَفِي حَدِيثِ جَرِيرٍ مِنْ الزِّيَادَةِ : (فَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ) [م: صَلَاةِ الْمُسَافِرِينَ وَقَصْرِهَا ١٢٩١]

55. इमाम व मुन्फ़रिद रुकूअ़ से खड़े हो कर क्या कहे

अबू हुरैराह ﷺ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के नबी ﷺ जब **سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ** कहते तो उस के बाद भी **اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ** कहते। (बुख़ारी: अल आज़ान 795) रावी: अबू हुरैराह	**كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا قَالَ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ قَالَ: اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ** [خ: الآذان ٧٩٥] عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

56. जब इमाम समिअल्लाहु लिमन ह़मिदाह कहे तो मुक़्तदी क्या कहे

अल्लाह के रसूल ﷺ फ़रमाते हैं:

जब इमाम **سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ** कहे तो तुम कहो **اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ** इस लिए कि जिस की ये दुआ़ फ़रिश्तों की दुआ़ से मुवाफ़क़त कर जाए उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाते हैं। (बुख़ारी: अल आज़ान 796, मुस्लिम: अस्सलाह: 617)	**إِذَا قَالَ الْإِمَامُ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ** [خ: الآذان ٧٩٦ – م: الصلاة ٦١٧] عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

57. दोनों सज्दों के दरमियान क्या कहे

हुज़ैफ़ा बिन यमान﷛ फ़रमाते हैं:

नबीﷺ दोनों सज्दों के दरमियान ये दुआ करते थे| **رَبِّ اغْفِرْ لِي رَبِّ اغْفِرْ لِي** (ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे| ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे|) (अबू दावूद, नसाई, इब्ने माजा) (इब्ने माजा बितह़क़ीक़िल अलबानी 897) (सह़ीह़)	**أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ** **كَانَ يَقُولُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ :** **رَبِّ اغْفِرْ لِي رَبِّ اغْفِرْ لِي** (د ن ه) [ه ٨٩٧ بتحقيق الألباني] (صحيح)

13. जलस ए इस्तिराह़त और उस से क़ियाम

58. दूसरी और चौथी रकअ़त के लिए खड़े होने से क़बल जल्सा ए इस्तिराह़त करना

मालिक बिन अल हुवैरिस़ अल्लैसीﷺ फ़रमाते हैं:

उन्होंने नबीﷺ को नमाज़ पढ़ते देखा कि जब आपﷺ पहली और तीस्री रकअ़त में होते तो (दूस्री या चौथी रकअ़त के लिए) खड़े होने से क़बल ठीक से बैठ जाते। (बुख़ारी: अल आज़ान: 823)	أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلَاتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا [خ: الأذان ٨٢٣]

59. दूस्री रकअ़त की क़िराअत से पहले कोई सकता नहीं

अबू हुरैराहﷺ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूलﷺ जब दूस्री रकअ़त के लिए उठते तो {الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ} से क़िराअत शुरू करते और (पहली रकअ़त की त़रह़ क़िराअत से क़बल) सुकूत नहीं करते। (मुस्लिम: अल मसाजिद व मवाज़िउस्सलाह 148-(599))	كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا نَهَضَ مِنَ الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ اسْتَفْتَحَ الْقِرَاءَةَ بِـ {الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ} وَلَمْ يَسْكُتْ [م: المساجد ومواضع الصلاة ١٤٨ – (٥٩٩)]

60. ज़मीन पर कैसे टेक लगा कर उठे [1]

अज़रक़ बिन क़ैस रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

मैं ने इब्ने उमर ﷺ को देखा जब वो (नमाज़ में) खड़े होना चाहते तो ज़मीन पर हाथों से टेक लगा कर उठते| रावी कहते हैं: इस के मुताल्लिक़ मैं ने उन से पूछा तो उन्होंने फ़रमाया: मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को इसी तरह करते देखा है| (अबू इस्हाक़ अल हरबी ने ग़रीबुल हदीस़ में रिवायत किया है|) (तमामुल मिन्नाह 196) (इस्नादुहू हसन)	رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ يعجن فِي الصَّلاةِ : يَعْتَمِدُ عَلَى يَدَيْهِ إِذَا قَامَ فَقُلْتُ لَهُ؟ فَقَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَفْعَلُهُ. (أخرجه أبو إسحاق الحربي في غريب الحديث [تمام المنة ص١٩٦] (إسناده حسن)

अज़रक़ बिन क़ैस रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

मैं ने इब्ने उमर ﷺ को देखा जब आप दो रकअ़त मुकम्मल कर के खड़े होना चाहते तो ज़मीन पर हाथों से टेक लगाते| रावी कहते हैं: मैं ने आप ﷺ के बेटे और आप के साथियों से पूछा: शायद आप ये बुढ़ापे की वजह से करते होंगे? उन लोगों ने जवाब दिया: नहीं बल्कि (नमाज़ का तरीक़ा) ऐसा ही है| (बैहक़ी फ़िल कुबरा) (तमामुलमिन्नाह स़.200) (इस की इस्नाद जय्यिद है और इस के तमाम रुवात सिक़ाह है|)	رأيتُ ابنَ عُمَرَ إذَا قامَ من الركعتينِ اعْتَمَدَ على الأرضِ بيدَيْهِ فقلتُ لوَلَدِهِ ولُجلَسَائِهِ: لَعَلَّهُ يفعلُ هَذَا من الكِبَرِ قالُوا: لا ولَكِنْ هَذَا يَكُوْنُ. (هق) [تمام المنة ص٢٠٠] (وهذا إسناد جيد رجاله ثقات كلهم)

---

[1] عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ جَاءَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ فَصَلَّى بِنَا فِي مَسْجِدِنَا هَذَا فَقَالَ إِنِّي لَأُصَلِّي بِكُمْ وَمَا أُرِيدُ الصَّلَاةَ وَلَكِنْ أُرِيدُ أَنْ أُرِيَكُمْ كَيْفَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي قَالَ أَيُّوبُ فَقُلْتُ لِأَبِي قِلَابَةَ وَكَيْفَ كَانَتْ صَلَاتُهُ قَالَ مِثْلَ صَلَاةِ شَيْخِنَا هَذَا يَعْنِي عَمْرَو بْنَ سَلِمَةَ قَالَ أَيُّوبُ وَكَانَ ذَلِكَ الشَّيْخُ يُتِمُّ التَّكْبِيرَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ عَنْ السَّجْدَةِ الثَّانِيَةِ جَلَسَ وَاعْتَمَدَ عَلَى الْأَرْضِ ثُمَّ قَامَ [خ: الآذان ٨٢٤]

14. तशह्हुद और उस में बैठने की कैफ़ियत

61. हर दो रकअ़त पर अत्तह़ियात

आ़इशा رضي الله عنها फ़रमाती हैं:

अल्लाह के रसूलﷺ हर दो रकअ़त पर अत्तह़ियाहत पढ़ा करते थे| (मुस्लिम: अस्स़लाह 240- (498)) मुस्लिम की रिवायत में "التَّحِيَّةَ" और अबू दावूद की रिवायत में "التَّحِيَّاتُ" लफ़्ज़ आया है| (अबू दावूद) (अबू दावूद बितह़क़ीक़िल अलबानी 783) (स़ह़ीह़)	وَكَانَ يَقُولُ فِي كُلِّ رَكْعَتَيْنِ التَّحِيَّةَ [م: الصلاة ٢٤٠ - (٤٩٨)] وَكَانَ يَقُولُ فِي كُلِّ رَكْعَتَيْنِ: التَّحِيَّاتُ (د) [د بتحقيق الألباني ٧٨٣] (صحيح)

62. तशह्हुद में निगाह इशारे पर हो

अ़बदुल्लाह बिन ज़ुबैरؓ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूलﷺ जब तशह्हुद में बैठते तो बाईं हथेली को बाईं रान पर रखते और सब्बाबा (यानी दाएं हाथ की शहादत की उंग्ली) से इशारा करते| आप की नज़्रे आप के इशारे से आगे नहीं बढ़ती थीं| (नसाई) (नसाई बितह़क़ीक़िल अलबानी 1275) (ह़सन स़ह़ीह़)	أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا قَعَدَ فِي التَّشَهُّدِ وَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَأَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ لَا يُجَاوِزُ بَصَرُهُ إِشَارَتَهُ (ن) [ن بتحقيق الألباني ١٢٧٥] (حسن صحيح)

63. तशह्हुद में तिरपन का अ़दद बना कर इशारा करना

इब्ने उमर ﷺ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूल ﷺ जब तशह्हुद में बैठते तो बायां हाथ बाएं घुटने पर और दायां हाथ दाएं घुटने पर रखते और तिरपन का अ़दद बना कर शहादत की उंगली से इशारा करते| (मुस्लिम: अल मसाजिद व मवाज़िइस्सलाह 912)	أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا قَعَدَ فِي التَّشَهُّدِ وَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُمْنَى وَعَقَدَ ثَلَاثَةً وَخَمْسِينَ وَأَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ [م: الْمَسَاجِدِ وَمَوَاضِعِ الصَّلَاةِ ٩١٢]

नोट: तिरपन का अ़दद बनाने की कैफ़ियत ये है कि अंगोठे को **مُسَبِّحَة** (शहादत की उंगली) के निचे मोअ़्तरिज़ा रखे [1]|

64. अंगोठा दरमियानी उंगली पर रख कर इशारा करना

अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूल ﷺ जब (तशह्हुद में) दुआ़ करने बैठते तो दाया हाथ दाई रान पर रखते और बाया हाथ बाई रान पर रखते| सब्बाबा (शहादत की उंगली) से इशारा करते| और अपने अंगोठे को दरमियानी उंगली पर रखते और बाई हथेली से अपने घुटने को पकड़े रहते| (मुस्लिम: अल मसाजिद व मवाज़िइस्सलाह 910)	كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا قَعَدَ يَدْعُو وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَيَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ وَوَضَعَ إِبْهَامَهُ عَلَى إِصْبَعِهِ الْوُسْطَى وَيُلْقِمُ كَفَّهُ الْيُسْرَى رُكْبَتَهُ [م: الْمَسَاجِدِ وَمَوَاضِعِ الصَّلَاةِ ٩١٠]

[1] قال الحافظ ابن حجر: وَصُورَتُهَا أَنْ يَجْعَلَ الْإِبْهَامَ مُعْتَرِضَةً تَحْتَ الْمُسَبِّحَةِ [التلخيص الحبير ج١ ص٤٧٠ رقم ٤٠١ – (٧٢)]

65. उंग्लियों का ह़लक़ा बना कर मुसलसल तह़रीके सब्बाबा

वाईल बिन हुजरؓ फ़रमाते हैं:

मैं ने अपने आप से कहा: मैं अल्लाह के रसूलﷺ की नमाज़ को ज़रूर देखूंगा कि आप कैसी नमाज़ पढ़ते हैं। लिहाज़ा मैं ने आप को नमाज़ पढ़ते देख लिया। ह़ज़रत वाइल नबीﷺ की नमाज़ की सिफ़त बयान करते हैं कि फिर आपﷺ बैठ गए। आपने अपने बाएं पैर को बिछा लिया और बाईं हथेली को बाईं रान और घुट्ने पर रखा। अपनी दाईं कोहनी को दाईं रान पर टिकाया। फिर अपनी दो उंग्लियों को बंद किया और[1] ह़ल्क़ा बनाया। फिर अपनी (शहादत की) उंग्ली उठाई। मैं ने देखा आप उसे ह़रकत दे रहे थे और दुआ़ कर रहे थे। (नसाई) (नसाई बितह़क़ीक़िल अलबानी 1268) (स़ह़ीह़)	قُلْتُ لأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ كَيْفَ يُصَلِّي فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ – فَوَصَفَ قَالَ: ثُمَّ قَعَدَ وَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ وَرُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَجَعَلَ حَدَّ مِرْفَقِهِ الأَيْمَنِ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ قَبَضَ اثْنَتَيْنِ مِنْ أَصَابِعِهِ وَحَلَّقَ حَلْقَةً ثُمَّ رَفَعَ أُصْبُعَهُ فَرَأَيْتُهُ يُحَرِّكُهَا يَدْعُو بِهَا (ن) [ن بتحقيق الألباني ١٢٦٨] (صحيح)

[1] (अंगोठे और दरमियानी उंग्ली से)

66. किन उंग्लियों से ह़ल्क़ा बनाए और किस उंग्ली से इशारा करे

वाइल बिन हुज्रﷺ फ़रमाते हैं:

मैं ने नबीﷺ को देखा आप ने दरमियानी उंग्ली और अंगोठे से ह़ल्क़ा बनाया और उन दोनों के पास वाली उंग्ली (अंगश्ते शहादत) को उठा कर तशह्हुद में दुआ़ करते रहे| (अबू दावूद, नसाई, इब्ने माजा) अल्फ़ाज़ इब्ने माजाह के हैं| (इब्ने माजाह बितह़क़ीक़िल अलबानी 912) (स़ह़ीह़)	رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَدْ حَلَّقَ بِالْإِبْهَامِ وَالْوُسْطَى وَرَفَعَ الَّتِي تَلِيهِمَا، يَدْعُو بِهَا فِي التَّشَهُّدِ (د ن ه) واللفظ لابن ماجه [ه بتحقيق الألباني ٩١٢] (صحيح)

एक रिवायत में यूं है:

(वाइल बिन हुज्रﷺ फ़रमाते हैं) और मैं ने देखा कि आपﷺ इस त़रह़ कर रहे हैं| ह़दीस़ के रावी बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने दाएं हाथ के सब्बाबा से इशारा कर के दिखाया और अंगोठे और दरमियानी उंग्ली से ह़ल्क़ा बनाया| (नसाई) (नसाई बितह़क़ीक़िल अलबानी 1265) (स़ह़ीह़)	وَرَأَيْتُهُ يَقُولُ هَكَذَا وَأَشَارَ بِشْرٌ بِالسَّبَّابَةِ مِنَ الْيُمْنَى وَحَلَّقَ الْإِبْهَامَ وَالْوُسْطَى (ن) [ن بتحقيق الألباني ١٢٦٥] (صحيح)

67. दोनों तशह्हुद में बैठते ही इशारा करना

अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ूबैरؓ से रिवायत है कि:

अल्लाह के रसूल ﷺ जब दो या चार रकअ़तों में बैठते तो अपने हाथों को घुटनों पर रखते फिर अपनी उंग्ली से इशारा करते| (नसाई, बैहक़ी) (अस्स़ह़ीह़ा (5/313) नम्बर 2248) (स़ह़ीह़)	كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا جَلَسَ فِي الثِّنْتَيْنِ أَوْ فِي الْأَرْبَعِ يَضَعُ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ، ثُمَّ أَشَارَ بِأُصْبُعِهِ (ن هق) [الصحيحة (٥/ ٣١٣) رقم ٢٢٤٨] (صحيح)

68. दो रकअ़तों के ख़त्म पर बैठने की कैफ़िय्यत

वाइल बिन हुज्रؓ फ़रमाते हैं:

मैं अल्लाह के रसूलﷺ के पास आया| मैं ने देखा आप जब नमाज़ शुरू करते तो दोनों हाथ कंधों तक उठाते और जब रुकूअ़ करते तब भी (रफ़उल यदैन करते हुऐ हाथों को मूंढों तक उठाते)| और जब दो रकअ़तों पर बैठते तो बाया पांव बिछा देते और दायां पावं खड़ा कर देते| (नसाई) (सुनन अन्नसाई बितह़क़ीक़िल अलबानी 1159) (स़ह़ीहुल इस्नाद)	أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَرَأَيْتُهُ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا جَلَسَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ أَضْجَعَ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْيُمْنَى (ن) [سنن النسائي بتحقيق الألباني ١١٥٩] (صحيح الإسناد)

69. पहले और दूसरे तशह्हुद में बैठने की कैफ़िय्यत में फ़र्क़

अबू हुमैद अस् साअिदीؓ की ह़दीस़ में है:

जब आपﷺ दो रकअ़तों पर बैठते तो अपने बाएं क़दम पर बैठ जाते और दाया क़दम खड़ा कर देते। और जब आख़्री रकअ़त में बैठते तो बाया क़दम दाएं पाउं के नीचे से बाहर निकाल देते, दाएं क़दम को खड़ा कर देते और सुरीन के बल बैठ जाते। (बुख़ारी: अल आज़ान 828)	فَإِذَا جَلَسَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ جَلَسَ عَلَى رِجْلِهِ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْيُمْنَى وَإِذَا جَلَسَ فِي الرَّكْعَةِ الْآخِرَةِ قَدَّمَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْأُخْرَى وَقَعَدَ عَلَى مَقْعَدَتِهِ [خ: الآذان ٨٢٨]

15. तशह्हुद (अत्तहि़यात)

70. तशह्हुद में सब से पहले क्या कहे

अ़ब्दुल्लह बिन मसऊदؓ फ़रमाते हैं:

كُنَّا إِذَا جَلَسْنَا خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قُلْنَا: السَّلَامُ عَلَى اللَّهِ قَبْلَ عِبَادِهِ السَّلَامُ عَلَى جِبْرِيلَ السَّلَامُ عَلَى مِيكَائِيلَ السَّلَامُ عَلَى فُلَانٍ وَفُلَانٍ فَلَمَّا انْصَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنَ الصَّلَاةِ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّلَامُ فَإِذَا جَلَسَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلَاةِ فَلْيَكُنْ مِنْ أَوَّلِ قَوْلِهِ: التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ، وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ – فَإِذَا قَالَهَا أَصَابَتْ كُلَّ عَبْدٍ صَالِحٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ – أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ثُمَّ يَتَخَيَّرْ مِنَ الدُّعَاءِ مَا أَحَبَّ

(حب) [التعليقات الحسان ١٩٥٢] (صحيح)

जब हम अल्लाह के रसूलﷺ के पीछे (नमाज़ में तशह्हुद में बैठते तो कहते: अल्लाह के बंदों से पहले खुद अल्लाह पर सलाम हो, जिबरील पर सलाम हो, मिकाईल पर सलाम हो, फुलां और फुलां पर सलाम हो|) अल्लाह के नबीﷺ नमाज़ से (फ़ारिग़ हो कर) पलटे तो आप ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला तो खूद सलाम है| लिहाज़ा जब तुम में से कोई शख़्स नमाज़ में (तशह्हुद में) बैठे तो सब से पहले उसे यूं कहना चाहिये|

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ، وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ

जब वो इस तरह कहे तो उस की ये दुआ़ आस्मान व ज़मीन में मौजूद तमाम नेक बंदों के लिए हो जाएगी|

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

इस के बाद उसे जो भी दुआ़ पसंद हो वो इख़्तियार कर ले| (इब्ने हि़ब्बान) (अत्तालीक़ातुल हि़सान 1952) (स़ही़ह़)

71. दोनों तशह्हुद में अत्तह़ियात पढ़ना

अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊदؓ फ़रमाते हैं:

हम अल्लाह के रसूलﷺ के साथ (नमाज़ पढ़ा करते और) हम कुछ भी नहीं जानते थे। अल्लाह के रसूलﷺ ने हम से कहा: हर जलसा (यानी तशह्हुद) में तुम यूं कहा करो: التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ (नसाई) (नसाई बितहक़ीक़िल अलबानी 1166) (सह़ीह़)	كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لَا نَعْلَمُ شَيْئًا فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: قُولُوا فِي كُلِّ جَلْسَةٍ التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ (ن) [ن بتحقيق الألباني ١١٦٦] (صحيح)

अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊदؓ फ़रमाते हैं:

हमें मालूम नहीं था कि हर दो रकअ़तों पर क्या कहते हैं| हम तो बस अपने रब की तस्बीह़ व तक्बीर व तह़मीद कर लिया करते| हमें मुह़म्मदﷺ ने ख़ैर की शुरूआ़त और इख़्तिताम के कलिमात सिखा दिए| आप ने फ़रमाया: जब तुम नमाज़ में हर दो रकअ़तों पर बैठो तो कहो: **التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ** फिर इस के बाद जो भी दुआ़ तुम्हें पसंद हो चुन लो और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो| (नसाई) (नसाई बितह़क़ीक़िल अलबानी 1163) (स़ह़ीह़)	**كُنَّا لَا نَدْرِي مَا نَقُولُ فِي كُلِّ رَكْعَتَيْنِ غَيْرَ أَنْ نُسَبِّحَ وَنُكَبِّرَ وَنَحْمَدَ رَبَّنَا وَإِنَّ مُحَمَّدًا ﷺ عَلَّمَ فَوَاتِحَ الْخَيْرِ وَخَوَاتِمَهُ فَقَالَ: إِذَا قَعَدْتُمْ فِي كُلِّ رَكْعَتَيْنِ فَقُولُوا: التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ وَلْيَتَخَيَّرْ أَحَدُكُمْ مِنَ الدُّعَاءِ أَعْجَبَهُ إِلَيْهِ فَلْيَدْعُ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ** (ن) [ن بتحقيق الألباني ١١٦٣] (صحيح)

72. तशह्हुद के अल्फ़ाज़

अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूल ﷺ ने मुझे तशह्हुद की दुआ सिखलाई। मेरी हथेली आप की हथेलियों के दरमियान थी। जैसे आप मुझे कुरआन की सूरह सिखलाया करते थे: **التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ** उस वक़्त आप ﷺ हमारे दरमियान मौजूद थे। फिर जब आप इन्तिक़ाल कर गए तो हम ने कहना शुरू किया **السَّلَامُ** यानी **عَلَى النَّبِيِّ** । (बुख़ारी: अल इस्तिज़ान 6265) अहमद की रिवायत में यूं है। (हम ने **السَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ** कहना शुरू किया।) (असलु सिफ़ति सलातिन्नबी ﷺ जि.3 स.870)	**عَلَّمَنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ – وَكَفِّي بَيْنَ كَفَّيْهِ – التَّشَهُّدَ كَمَا يُعَلِّمُنِي السُّورَةَ مِنْ الْقُرْآنِ التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ وَهُوَ بَيْنَ ظَهْرَانَيْنَا فَلَمَّا قُبِضَ قُلْنَا السَّلَامُ – يَعْنِي – عَلَى النَّبِيِّ ﷺ** [خ: الإستئذان ٦٢٦٥] وفي رواية لأحمد: (قُلْنَا السَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ) [أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج٣ ص٨٧٠]

73. तशह्हुद का सिर्रन पढ़ना

अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷠ फ़रमाते हैं:

सुन्नत ये है कि तशह्हुद सिर्रन पढ़े। (अबू दावूद, तिर्मिज़ी) (सुनन अबी दावूद बितह़क़ीक़िल अलबानी 986) (स़ह़ीह़)	مِنْ السُّنَّةِ أَنْ يُخْفِيَ التَّشَهُّدَ (د ت) [سنن أبي ابوداود بتحقيق الألباني ٩٨٦] (صحيح)

16. नबीﷺ पर सलात (दरूद)

अ़ब्दुर रह़मान बिन अबी लैला फ़रमाते हैं:

लَقِيَنِي كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ فَقَالَ أَلَا أُهْدِي لَكَ هَدِيَّةً سَمِعْتُهَا مِنْ النَّبِيِّ ﷺ فَقُلْتُ بَلَى فَأَهْدِهَا لِي فَقَالَ سَأَلْنَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ الصَّلَاةُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ فَإِنَّ اللَّهَ قَدْ عَلَّمَنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ عَلَيْكُمْ قَالَ : قُولُوا: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ [خ: أحاديث الأنبياء – ٣٣٧٠ م: ٦١٤ نحوه]	मेरी काअ़ब बिन उजराह रज़ि. से मुलाक़ात हुई। आप ने फ़रमाया: क्या मैं नबीﷺ से सुनी हुई ह़दीस़ तुम्हें हदिया ना कर दूं? मैं ने कहा क्यूं नहीं! मुझे हदिया कर दीजिए। आपरज़ि. ने फ़रमाया: हम ने अल्लाह के रसूलﷺ से पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! आप अहले बैत पर स़लात कैसे पढ़ी जाए? अल्लाह ने हमें आप पर सलाम पढ़ना तो सिखला दिया है। आप ने फ़रमाया: कहो: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ [1] (बुख़ारी: अह़ादिसुल अम्बियां 3370, मुस्लिम: 614)

[1] ऐ अल्लाह! मुहम्मद पर और आप की आल पर स़लात नाज़िल फ़रमा जैसा कि तू ने इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर स़लात नाज़िल की। तू यक़ीनन तारफिफ़ के लाएक है, बडी बुज़ुरगी वाला है, ऐ अल्लाह! मुहम्मद पर आले मुहम्मद पर बरकत नाज़िल फ़रमा जैसी तू ने इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर बरकत नाज़िल की। तू यक़ीनन तारफिफ़ के लाएक है, बडी बुज़ुरगी वाला है।

17. नबीﷺ पर दरूद के बाद तअ़व्वुज़ और दुआ़

74. चार चीज़ों से तअ़व्वुज़

अल्लाह के रसूलﷺ फ़रमाते हैं:

إِذَا تَشَهَّدَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنْ أَرْبَعٍ يَقُولُ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ [م: الْمَسَاجِدِ وَمَوَاضِعِ الصَّلَاةِ ٩٢٤] عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ	जब तुम तशह्हुद पढ़ लो तो चार चीज़ों से अल्लाह तआ़ला की पनाह चाहो और यूं कहो: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ [١] (मुस्लिम: अल मसाजिद व मवाज़िइस्सलाह 924) रावी: अबू हुरैराह

[१] ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूं जहन्नम के अ़ज़ाब से, क़ब्र के अ़ज़ाब से, मौत और ज़िंदगी के फ़ितने से और मसीह़ दज्जाल के फ़ितने से|

75. दुआ

اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي...

अबू बक्र सिद्दीक़ ﷺ फ़रमाते हैं:

कि उन्होंने अल्लाह के रसूल ﷺ से अ़र्ज़ किया: मुझे ऐसी दुआ़ सिखलाइये जिसे नमाज़ में पढ़ा करूं। आप ने फ़रमाया: कहो: **اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي إِنَّك أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.** [1] (बुख़ारी: अल आज़ान: 834, मुस्लिम: अज़्ज़िक्र वत्तौबा वल इस्तिग़फ़ार 4876)	**أَنَّهُ قَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ: عَلِّمْنِي دُعَاءً أَدْعُو بِهِ فِي صَلَاتِي قَالَ قُلْ اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي إِنَّك أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ** [خ: الآذان ٨٣٤ – م: الذِّكْرِ وَالدُّعَاءِ وَالتَّوْبَةِ وَالِاسْتِغْفَارِ ٤٨٧٦]

[1] ऐ अल्लाह! मैं ने अपने नफ़स पर बहुत ज़ुल्म किया। गुनाहों को सिर्फ़ तू ही मुआ़फ़ करता है। मेरे गुनाहों को बख़्श दे। मुझ पर रहम फ़रमा। तू ही रहम करने वाला, मुआ़फ़ करने वाला है।

18. सलाम

76. सलाम से नमाज़ ख़त्म करना

अल्लाह के रसूलﷺ फ़रमाते हैं:

नमाज़ की कुंजी त़हारत है। और तकबीर उस की तह़रीम (ह़राम करने वाली) है और सलाम उस की तह़लील (ह़लाल करने वाली) है। (मुसनद, अबू दावूद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजाह) रावी: अ़ली (स़ह़ीह़ अल जामे 5885) (स़ह़ीह़)	مِفْتَاحُ الصَّلَاةِ الطُّهُورُ وَتَحْرِيمُهَا التَّكْبِيرُ وَتَحْلِيلُهَا التَّسْلِيمُ (حم د ت ه) عن علي. [صحيح الجامع ٥٨٨٥] (صحيح)

77. दाएं बाएं सलाम फेरना

सअ़द बिन अबी वक़्क़ासؓ फ़रमाते हैं:

मैं अल्लाह के रसूलﷺ को देखा करता। आप अपनी दाई और बाई जानिब सलाम फेरते यहां तक कि मुझे आप के गाल की सफ़ेदी दिखाइ देती। (मुस्लिम: अल मसाजिद व मवाजिइस्स़लाह 916)	كُنْتُ أَرَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يُسَلِّمُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ يَسَارِهِ حَتَّى أَرَى بَيَاضَ خَدِّهِ [م: الْمَسَاجِدِ وَمَوَاضِعِ الصَّلَاةِ ٩١٦]

78. सलाम के अल्फ़ाज़ : السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ

अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه फ़रमाते हैं:

नबी ﷺ अपनी दाईं और बाईं जानिब सलाम फेरते ह़त्ता कि आप के गाल की सफ़ेदी नज़र आती। (सलाम के अल्फ़ाज़ ये होते:) السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ (अबू दावूद) (अबू दावूद बितह़क़ीक़िल अलबानी 996) (स़ह़ीह़)	أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُسَلِّمُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ حَتَّى يُرَى بَيَاضُ خَدِّهِ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ (د) [د بتحقيق الألباني ٩٩٦] (صحيح)